पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भिलाई, छत्तीसगढ़

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

सप्त दिवसीय

(राष्ट्रीय कार्यशाला)

दिनांक : 02 फरवरी से 08 फरवरी 2024

विषय– *शैलकला का उद्भव, विकास एवं नृ–पुरातत्वीय अध्ययन*

प्रथम परिपत्र

स्थान

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भिलाई, छत्तीसगढ़

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला,

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़

SINGH
Nikon

शैल चित्रकला का उद्भव समझना मनुष्यों के लिए जरूरी, यहां से हुई कला शुरुआत

रायपुर। रविवि द्वारा को शैल चित्रकला के उद्भव और विकास की जानकारी दे रहा है। खास बात यह है कि इस विशेष कार्यक्रम में ना सिर्फ रविवि बल्कि दूसरे राज्यों के छात्र भी शामिल हैं। रविवि अध्ययनशाला के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग द्वारा इस पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है। आईआईटी भिलाई संग मिलकर रविवि यह आयोजन कर रहा है। इसके अंतर्गत छात्रों को पुरातत्वीय अध्ययन से जुड़ी विस्तृत जानकारी दी जा रही है। 2 से 8 फरवरी तक आयोजित इस सात दिवसीय वर्कशॉप में छात्रों को प्रैक्टिकल जानकारी देने के लिए फील्ड विजिट भी करवाया जाएगा। यह भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली तथा संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा प्रायोजित है। पहले दिन कार्याशाला का शुभारंभ आईआईटी भिलाई कैंपस में हुआ। जहां मुख्य अतिथि के रूप में विधायक अजय चंद्राकर मौजूद रहे। विशेष अतिथि के रुप में संस्कृति विभाग के सचिव अनबलगन पी. तथा रविवि के कुलपति प्रो.सच्चिदानंद शुक्ल उपस्थित रहे। आईआईटी भिलाई के निदेशक प्रो.राजीव प्रकाश व संयोजक डॉ.नितेश मिश्र भी शामिल हुए।

देशभर के 80 छात्रों को रविवि लेकर जाएगा कबरापहाड़ और उषाकोठी

दिया जाएगा खास तरह का प्रशिक्षण

कार्यशाला में भारत के विभिन्न राज्यों जैसे महाराष्ट्र, ओडिसा, उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, उत्तराखंड, राजस्थान, दिल्ली आदि से लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया है। इस कार्यशाला के प्रथम दो दिन के व्याख्यान आई आई टी भिलाई में होंगे। इसके बाद के तीन दिन शैलचित्रों के अध्ययन हेतु प्रतिभागियों को रायगढ़ जिले ले जाया जाएगा जहां वे कबरापहाड़ और उषाकोठी नामक पुरास्थल पर शैलचित्रों से संबंधित जानकारी और प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। कार्यशाला के अंतिम दो दिन का व्याख्यान रविवि में होगा।

दैनिक
क्रांतिकारी संकेत

रायगढ़, गुरुवार, 08 फरवरी 2024

रायगढ़ में शैलचित्रों पर आयोजित हुई त्रिदिवसीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण शिविर

समापन समारोह में शामिल हुए कलेक्टर कार्तिकेया गोयल, देश के 12 राज्यों के 65 से अधिक महाविद्यालयीन छात्रों, विशेषज्ञों, व्याख्याताओं की रही हिस्सेदारी

रायगढ़। कलेक्टर कार्तिकेया गोयल के मुख्य आतिथ्य में रायगढ़ के शैलचित्रों की त्रिदिवसीय कार्यशाला एवं प्रशिक्षण शिविर का गरिमामय समापन, मारवाड़ी पंचायती धर्मशाला में संपन्न हुआ। कलेक्टर श्री गोयल ने रायगढ़ के शैलचित्रों की इस कार्यशाला एवं प्रशिक्षण शिविर को महत्वपूर्ण बताया और पूरे टीम को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पुरातत्विक जानकारियों के प्रचार-प्रसार और इसके संवर्धन में हमेशा अपने सहयोग की बात कही। इस अवसर पर संयुक्त कलेक्टर ऋषा ठाकुर, डिप्टी कलेक्टर रीतू हेमनानी, गोपाल अग्रवाल, विनोद अग्रवाल, मनोज श्रीवास्तव, नरेश अग्रवाल, प्रशिक्षण शिविर की पूरी टीम के साथ गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि भारतीय पुरातत्व का इतिहास काफी प्राचीन रहा है। पुरातत्व के क्षेत्र में शैलचित्रों का प्रमुख स्थान है। ऊंचे पहाड़ों पर मिलने वाले प्राचीन शैलचित्र भारतीय प्रागैतिहासिक काल के अमिट छाप हैं। यह धरोहर मानव के आदिम हस्ताक्षर है जो आज भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों से पाए जाते हैं। शैलचित्र कला की दृष्टि से छत्तीसगढ़ राज्य भी काफी समृद्ध है। छत्तीसगढ़ में चितवा डोंगरी, ओंगना, कबरा पहाड़, उषाकोठी आदि जैसे शैलाश्रय प्राप्त हुए है जिनसे प्रागैतिहासिक काल की जानकारी प्राप्त होती है। किन्तु छत्तीसगढ़ के इस प्रकार के धरोहरों के बारे में यहां के स्थानीय तथा इस क्षेत्र से बाहर के लोगों में जानकारी कम है और इसी उद्देश्य को पूर्ति हेतु प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर छत्तीसगढ़ और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में 'शैलीचित्र कला का उद्भव, विकास और नृ-पुरातत्वीय अध्ययन' विषय पर सप्त दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कार्यशाला भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन तथा डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एन्ड टेक्नोलॉजी के द्वारा प्रायोजित है। इस कार्यशाला का शुभारंभ आईआईटी भिलाई में 02 फरवरी को हुआ।

कार्यशाला में भारत के विभिन्न राज्यों जैसे महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, बिहार छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, केरल, उत्तराखंड, राजस्थान, दिल्ली, श्रीलंका आदि से लगभग 63 प्रतिभागियों ने भाग लिया है। कार्यशाला के प्रथम दो दिन के व्याख्यान आईआईटी भिलाई में हुए। इसके बाद के तीन दिन शैलचित्रों के अध्ययन हेतु प्रतिभागियों को रायगढ़ जिले लाया गया जहां वे कबरापहाड़ और उषाकोठी नामक पुरास्थल पर शैलचित्रों से संबंधित जानकारी और प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। सभी प्रतिभागी और एक्सपर्ट आईआईटी भिलाई से ट्रेन के माध्यम से रायगढ़ पहुंचे। तत्पश्चात दो व्याख्यान हुए। प्रथम व्याख्यान डॉ. अकींत प्रधान ;सुपरीटेंडेंट आर्कियोलॉजिस्ट, एएसआई चंडीगढ़ सर्कल का था।

काबरा पहाड़ ले जाकर दी गई फील्ड ट्रेनिंग

इन्होनें प्रतिभागियों को किसी पुरास्थल पर शैल चित्रकला के अध्ययन में किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए, इस विषय पर चर्चा की। दूसरा व्याख्यान डॉ. विनय कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर बी.एच. यू. वाराणसी ने नृ-पुरातत्वीय अध्ययन विषय पर दिया। जिसमें इन्होंने शैल चित्रकला को जनजातियों से सम्बद्ध करने का प्रयास किया। 5 फरवरी को प्रतिभागियों को काबरा पहाड़ नामक पुरास्थल ले जाया गया। जहाँ उन्हें फील्ड ट्रेनिंग दी गई। यहा एक्सपर्ट के रूप में डॉ एसबी ओटा सेवानिवृत्त एडीजी, एएसआई, पुराविद निहारिका श्रीवास्तव और सुमन पाण्डेय ने शैल कला के तकनीकी पक्ष जैसे जीपीएस, जीआईएस, टोपोसीट एवं डीसटो मेटर का प्रयोग कैसे किया जाए इसका प्रशिक्षण दिया। साथ ही वरिष्ठ पुरातत्वविद प्रो.आरपी पाण्डेय भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययन शाला, जीवाजी यूनिवर्सिटी ग्वालियर भी मौजूद थे। विषय-विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को यहां के शैलीचित्रों से परिचित करवाया। शैलीचित्रों के रंग, अंकन यहा शैल चित्र बनाने के कारण, उद्देश्य आदि विषयों पर उन्होंने विस्तृत चर्चा की। शैलाश्रयों के माप लेना, उन्हें किसी काल विशेष से संबंधित करना, उनके विभिन्न विषय वस्तुओं का अध्ययन करना भी सिखाया गया।

फील्ड ट्रेनिंग में रायगढ़ से इनका मिला सहयोग

इस फील्ड ट्रेनिंग हेतु रायगढ़ नगर के गणमान्य नागरिक मनोज श्रीवास्तव, विनोद अग्रवाल, डॉ.आनंद मूर्ति, गोपाल अग्रवाल, नरेंद्र नेताम, पर्यटन विभाग से आभिका तिवारी, भानु मिश्र, सूरज पेटल सरपंच पंचायत लोईंग और दाताराम पटेल का विशेष सहयोग भी प्राप्त हुआ। रायगढ़ में तृतीय दिवस को उषाकोठी नामक एक अन्य पुरास्थल ले जाया गया वहाँ भी शैल कला का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डा.तितेश कुमार मिश्र ने किया। कार्यशाला के अंतिम दो दिन का व्याख्यान और समापन समारोह पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़ में संपन्न होंगे।